Artistic Narration Vol. XIV No. 2 July-Dec. 2023 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

भारतीय चित्रकला के उद्भव एवं विकास का क्रमिक अध्ययन

अमित कुमार,
शोधार्थी, चित्रकला विभाग
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय माधवपुरम, मेरठ
ईमेलः amitk529298@gmail.com

प्रो0 उमाशंकर प्रसाद
चित्रकला विभाग
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय माधवपुरम, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

अमित कुमार,
प्रो0 उमाशंकर प्रसाद

भारतीय चित्रकला के उद्भव एवं विकास का क्रमिक अध्यय

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 2,
Article No. 22 pp. 163-170

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

भारतीय चित्रकला का उद्भव मानव की उत्पत्ति के साथ ही माना जाता है। जब पृथ्वी पर मानव ने जन्म लिया उसके बाद ही उसने अपनी भावनाओं द्वारा कला रचना आरम्भ कर दी थी।

सर्वप्रथम मानव ने गुफाओं में व शिलाओं पर कला की रचना की थी। मानव ने गुफाओं में विभिन्न विषयों के चित्र–चित्रित किये थे। वह अपनी भावात्मक दृष्टि से नए–नए रंगों द्वारा बहुत सुन्दर–सुन्दर चित्र अंकन करने लगा। गुफाओं व शिलाओं की उस कला को प्रागैतिहासिक काल नाम दिया गया। प्रागैतिहासिक काल को भी मानव विकास की दृष्टि से तीन भागों में बांटा गया। जो पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण और नवपाषाण काल के नाम से जाने गये। उस समय की कला में मानव ने गेरूए, पीले, हरे आदि रंगों द्वारा चित्रण कार्य किया था। आरम्भ में मानव ने टेढ़ी मेढ़ी रेखाओं द्वारा चित्रण किया तथा बाद में उसने काल दर काल कला को विकसित किया। प्रागैतिहासिक के बाद सिन्धु घाटी सभ्यता की कला भी बहुत ही विशिष्ट है। इस कला के अन्तर्गत भी मानव ने मृद भाण्डों व मोहरों पर बहुत ही अलंकृत कला के नमूने पेश किये। उन्होंने योगी शिव व मातृदेवी का भी चित्रांकन सिन्धु कला के अन्तर्गत किया था। सिन्धु घाटी सभ्यता के पश्चात भित्ति चित्रण परम्परा या गुफाओं की चित्रकला का समय आया तथा चित्रण कार्य हुआ। भित्ति चित्रकला के अन्तर्गत अजन्ता, एलोरा, बाघ, सित्तनवासल, बादामी आदि गुफाओं में कलाकारों ने सुन्दर चित्रण किया है। भित्ति चित्रों के बाद लघु चित्रकला का समय काल आरम्भ हुआ। लघु चित्रकला के अन्तर्गत मुगल शैली, राजस्थानी शैली व पहाड़ी शैली के अन्तर्गत चित्रण कार्य हुआ। लघु चित्रकला के अन्तर्गत भी विशिष्ट व अद्भुत चित्रण हुआ। लघु चित्रकला के पश्चात आधुनिक युग या काल की चित्रकला प्रकाश में आई जिसमें पटना या कम्पनी शैली में यूरोपीय व भारतीय विषयों का चित्रण हुआ था। पटना शैली में ही तैल रंग का आविष्कार भारत में हुआ था। पटना शैली के बाद बंगाल शैली व आधुनिक कला शैली में विभिन्न परिवर्तित चित्रण भारतीय कलाकारों ने किया था। अतः मनुष्य ने प्राचीन काल की कला से आरम्भ करके आधुनिक युग तक की चित्रकला को बहुत ही विशिष्ट व मार्मिक रूप में चित्रित किया है।

प्रस्तावना

हमारी पृथ्वी पर मानव के जन्म के साथ ही चित्रकला का उद्‌गम माना जाता है। जब मानव की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई थी, उस समय वह गुफाओं में रहता था तथा कन्दमूल फल खाकर अपना जीवन यापन करता था। उस समय वह पशुओं आदि का शिकार करके अपने भोजन की व्यवस्था करता था। गुफाओं में रहते हुए और जंगलों में रहते हुए ही उसने वहाँ पर भरमार चित्र बनाए। उन चित्रों में मानव का भावात्मक रूप था। अधिकतर चित्र शिकार अथवा आखेट के मिले हैं। मानव जब चित्रकारी करता था तब वह गेरू, रामरज, खड़िया व कोयला आदि का प्रयोग करता था। **(चित्र सं० 1)** ''हजारो वर्ष बाद इसी विकास क्रम में आगे चलकर उसने सुरक्षा के लिए गुहाओं की शरण ली।''[1] मानव ने अपने विकास के लिए चित्रकला को भी एक साधन के रूप में अपनाया था। धीरे–धीरे मानव विकास करता गया तथा चित्रकला का भी विकास होता गया। मानव ने अपनी चित्रकला के अन्तर्गत प्रतीकात्मक रूपों को उकेरा जो उसके मन में समाहित थे। मानव का आरम्भिक जीवन टेढ़ी मेढ़ी रेखाओं व कुछ भद्दे चित्रों के उकेरने में गुजरा था। धीरे–धीरे उसने चित्रों में रंग भरना भी आरम्भ कर दिया था। उसने चित्रकला अपने आनन्दमय जीवन के लिए की थी। प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के पशुओं जैसे–भालू, गाय, भैंसा, शेर, गेंडा़, और घोड़ा आदि का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया था। प्रागैतिहासिक चित्रों को मुख्य रूप तीन भागों में बांटा गया है। वे तीन प्रकार निम्न हैं–पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल तथा नवपाषाण काल आदि। ''आरम्भिक पाषाण युग का मनुष्य एक जगह स्थिर नहीं रहा।''[2] पुरापाषाण काल के अन्तर्गत मानव ने अविकसित रूप में चित्रकला का कार्य किया। उसने उस समय कोयले व गेरू आदि से तीरछी रेखाओं द्वारा चित्रण कार्य किया। फिर धीरे–धीरे विकास होता चला गया व मध्य पाषाण काल में उसने बर्तन आदि भी बनाने शुरू किए। मध्य पाषाण काल में मनुष्य ने कला का बहुत सुधरा हुआ रूप प्रस्तुत किया था।

उसने आनन्दित व भावात्मक रूप द्वारा चित्रकला के विभिन्न रूपों को हमारे सामने प्रस्तुत किया। हमारे जीवन में उस कला का बहुत ही विशिष्ट स्थान है। मध्य पाषाण काल के पश्चात मानव ने नवपाषाण काल में प्रवेश किया तथा चित्रकला का और अधिक परिष्कृत रूप हमारे सामने प्रस्तुत किया। मानव ने विभिन्न प्रकार के पक्षियों जैसे–मोर, चिड़िया, बाज आदि का भी चित्रण अपनी कला के अन्तर्गत किया था। **(चित्र सं० 2)** उस समय की चित्रकला एक अद्‌भुत रूप लिये हुए है। भारत की चित्रकला का प्रतीकात्मक रूप भी एक विषेशता है। यह कला प्रतीकात्मक रूप द्वारा विभिन्न प्रकार के अर्थो को प्रदर्षित करती है। प्रतीक चित्रण एक स्थूल तथा रहस्यमयी चित्रण होता है। प्रागैतिहासिक चित्रकला के बाद सिन्धु घाटी सभ्यता में भी मानव ने बहुत सुन्दर एवं अलंकारिक कला रचित की है। ''यह सर्वमान्य तथ्य है कि यहाँ की कला–संस्कृति पूर्णतया स्वदेशी थी जिसके सम्बल पर भारत की उत्तरोंत्तर काल की संस्कृति का निर्माण हुआ।''[3]

इसके अन्तर्गत बहुत ही अलंकारिक एवं मार्मिक अर्थ लिए हुए चित्रकला का संयोजन हुआ है। सिन्धु घाटी सभ्यता के अन्तर्गत मानव ने मातृदेवी, पशु–पक्षी, बारहसिंहा, कुकुदयुक्त बैल और मछली आदि का चित्रण प्राप्त हुआ है। सिन्धु सभ्यता में ज्यामितीय आकारों में तिरछी एवं गोल तथा अर्द्धचन्द्राकार रेखाओं के आलेखनों का प्रयोग किया गया है। इस सभ्यता को 'मृत' पात्रों की सभ्यता' कहकर पुकारा जाता है। इस सभ्यता की सामग्री भारत, पाकिस्तान व पंजाब प्रान्त में प्राप्त होती है। **(चित्र सं० 3)** इन प्रान्तों के अन्तर्गत आने वाले स्थानों में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, चन्हूदड़ों आदि स्थान आते हैं। इन्हीं स्थानों पर उत्खनन कार्य के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ, बर्तन व मूर्तियाँ आदि प्राप्त हुई हैं। इस सभ्यता की कला विभिन्न देवी देवताओं जैसे–मातृदेवी व योगी शिव आदि के भी चित्रण मिलते हैं।

सिन्धु सभ्यता के बाद भित्ति चित्रकला का समय काल आता है। इस काल के अन्तर्गत जोगीमारा गुफा का काल सबसे पहले माना जाता है। जोगीमारा के गुहा चित्र 300 ईसा पूर्व के माने जाते हैं। वे चित्र जैन धर्म के बताये गये हैं। उस समय मौर्य काल की कला अवतरित मानी जाती है। जोगीमारा की भित्ति चित्रकारी का एक अलग ही महत्व है। जोगीमारा की गुफाओं में अजन्ता की आरम्भिक गुफाओं के समान बहुत ही सुन्दर चित्रांकन है। इनके चित्रों में आकृतियाँ सांची तथा भरहुत से मिलती जुलती मानी जाती हैं। जोगीमारा की गुफाओं में मुख्यतः लाल, गेरूए, काले, पीले, फिरौंजी रंगों का प्रयोग बड़ी विशिष्टता के साथ किया गया है। जोगीमारा की गुफाओं के चित्रों का धरातल सपाट नहीं है। **(चित्र सं० 4)**

भित्ति चित्रण के क्षेत्र में अजन्ता की गुफाओं में भी अद्वितीय चित्रण मिलता है। अजन्ता का कला संसार विश्व भर में प्रसिद्ध है। ''गुप्त काल में बौद्ध तथा जैन धर्मो की ओर जनता बढ़ रही थी।''[4] अजन्ता के चित्रों में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की घटनाओं को चित्रित किया गया है। बौद्ध कला की शुरूआत छठीं शताब्दी ई० पूर्व की मानी जाती है। यह समय जैन व बौद्ध धर्मो के उदय का समय माना जाता है। उस समय बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा अनेक स्तूप व बिहारों का निर्माण कराया गया था।

इन स्तूपों में सांची व भरहुत स्तूप प्रसिद्ध माने जाते हैं। इनके अलावा बौद्ध कला की अमूल्य धरोहर मन्दिरों व कास्य मूर्तियों में भी देखी जाती है। भारत के अन्तर्गत भित्ति चित्रण कला एक बहुत बड़ी व महान विरासत के रूप में पायी जाती है। इस कला का सबसे समृद्ध व विशाल केन्द्र अजन्ता को ही माना जाता है। अजन्ता चित्रण में चित्रकारों ने अपने मन की गहन आत्मा व मनोभावों को चित्रित किया है। मुख्य रूप से अजन्ता की 6 गुफाओं में ही चित्र मिलते हैं। अजन्ता की गुफा नं० 17 का चित्र 'माता और पुत्र' करुणा का प्रतीक है, तथा करुणा से भर देता है। अजन्ता भित्ति चित्रों का एक तीर्थ स्थान है। महात्मा बुद्ध के जीवन में या समय में जो घटनाएँ घटित हुईं थी, उन्हीं बातों को कलाकारों ने इन गुफाओं में उकेरा व रचित किया। **(चित्र सं० 5)**

इस चित्रकला में चित्रण का आरम्भिक व अन्तिम रुप दिखाई देता है। विश्व भर के प्रसिद्ध कला विद्वानों ने अजन्ता की कला की अभिव्यक्ति करके उसे विश्व भर की कला के सन्दर्भों में देखा। अजन्ता भित्ति चित्रकला का जाना माना व विश्व प्रसिद्ध रूप है। अजन्ता गुफाओं के प्रतीकात्मक भित्ति चित्रण का मिला जुला रूप सिगिरिया की गुफाओं में भी दिखाई देता है। सिगिरिया की गुफाएँ श्रीलंका में स्थित हैं। सिगिरिया की गुफाओं में भी भित्ति चित्रकला का एक विशिष्ट रूप दुनिया के सामने है। सिगिरिया गुफा के चित्र भी संसार भर के कलाविदों ने उत्कृष्ट बताए है। उसी प्रकार बादामी, एलोरा, बाघ तथा सित्तनवासल की गुफाओं में भी भित्ति चित्रण के बहुत ही आकृष्ट चित्र प्राप्त होते हैं। उन चित्रों का निर्माण चित्रकार ने अपनी मनोस्थिति और मनोभावों के साथ किया हैं। बाघ की गुफाएँ मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। ''यहीं पर 'बाघेश्वरी देवी' का प्राचीन मंदिर भी है।''[5] वहाँ के लोग बाघ गुफाओं को पाँच पाण्डव गुफाओं के नाम से जानते हैं। बाघ गुफाओं में कुल 9 गुफाएँ थीं व सभी बिहार गुफाएँ थीं। बाघ गुफाओं का एक अत्यन्त प्रसिद्ध चित्र 'नृत्यांगनाएँ एवं वादिकाएँ है। बादामी की गुफाओं में भी बहुत सुन्दर और उत्कृष्ट प्रतीकात्मक भित्ति चित्रण हुआ है। बादामी गुफा के अलावा ऐलिफेन्टा व सित्तनवासल आदि गुफाओं में भी भित्ति चित्रण के सुन्दर प्रतीकात्मक नमूने पाए गए हैं। **(चित्र सं० 6)** मध्य काल की चित्रकला के क्रमिक विकास के तहत चित्रकला का अगला विकास कदम होगा। भित्ति चित्रकला के बाद अर्थात् मध्यकाल के अन्तर्गत बौद्ध कला का एक सूक्ष्म रूप या अंश पाल शैली के नाम से विकसित हुआ। परन्तु पाल शैली के बाद कला का एक अन्य रूप अपभंश शैली के नाम से भी जाना जाता है।

10वीं शताब्दी से आरम्भ होकर 15वीं शताब्दी तक चित्रकला की परम्परा को मजबूत रखने का श्रेय मुख्य रूप से 4 शैलियों को जाता है। मुख्य रूप से भारतीय कला इतिहास की ये 4 शैलियाँ है 'पाल', 'जैन', 'गुजरात' तथा अपभ्रंश शैली। पाल शैली को पोथियों की चित्रकला माना जाता है। अर्थात् पाल शैली के अन्तर्गत चित्रित

पोथियाँ प्राप्त होती है। ये पोथियाँ मुख्य रूप से बौद्ध धर्म से सम्बन्धित थीं। इन पोथियों के अन्तर्गत देवी देवताओं तथा बुद्ध प्रतिमानों के चित्र निर्मित किये गये थे। पॉल शैली के बाद 'अपभ्रंश शैली' का कालक्रम आया। अपभ्रंश शैली को बिगड़ी हुई शैली भी कहा गया। ''यह बात अवश्य है कि अधिकांश जैन ग्रन्थ इसी शैली में चित्रित हुए है।''[6]

अपभ्रंश शैली 11वीं शताब्दी के आरम्भ में हुई मानी जाती है। अपभ्रंश शैली के अन्तर्गत कागज पर चित्र निर्माण होने लगा था। अपभ्रंश शैली का समय काल मुख्य रूप से 11वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक माना जाता है। इस शैली में विभिन्न ग्रन्थों में चित्रों की रचना हुई जैसे–'बसन्त विलास', 'गीत–गोविन्द', 'दुर्गासप्तशती' आदि पोथियाँ। अपभ्रंश शैली के चित्रों की मुख्य विशेषता अलंकारिता है। अपभ्रंश शैली में 'कल्पसूत्र' रचना को श्रेष्ठ माना गया है। इस शैली में कोणात्मक रेखाओं का प्रयोग किया गया है। 'भगवान महावीर' की आकृति में पीले रंग का चित्रण किया गया है। अपभ्रंश शैली से सम्बन्धित मध्यकाल प्राकृत भाषाओं का रचनाकाल माना जाता है। कागज पर जैन चित्रों का निर्माण 15वीं शताब्दी माना जाता है। इस शैली के अन्तर्गत 'प्रज्ञापारमिता' नामक रचना का भी चित्रण तालपत्रों पर हुआ है। **(चित्र सं० 7)**

अपभ्रंश शैली के बाद भारत में मुगल लघु चित्रकला प्रारम्भ हुईं इस कला को दरबारी कला भी कहा गया। इस शैली को भी लघु चित्रकला के रूप में रखा गया है। ''इस प्रकार मुगल चित्र शैली ने भारतीय चित्रकला में नये प्रगतिशील तत्वों का समावेश किया और अंकन, अलंकरण और रंगाभारण की दृष्टि से भी उसे नया आलोक प्रदान किया।''[7] मुगल शैली में बारीक रेखांकनों का प्रयोग किया गया। इस शैली के प्रसिद्ध चित्रकार 'मंसूर' द्वारा चित्रित 'बाज' का चित्र विश्व भर में प्रसिद्ध हुआ। मुगल शैली में जहाँगीर सर्वाधिक कला प्रेमी शासक था। जहाँगीर का काल भारतीय चित्रकला का स्वर्णकाल कहलाता है। मुगल शैली के पश्चात राजस्थानी शैली पल्लवित हुई। ''16वीं शती से 20वीं शती तक क्रमबद्ध ढंग से अनवरत भारत में प्रचलित प्रायः चित्रशैलियों में अनेक काव्यों का इतिहास मिल जाता है।''[8]

इस शैली में भी विभिन्न विषयों जैसे प्रेम, श्रृंगार, बारहमासा, रागमाला आदि चित्रण प्रतीकात्मक रूप में हुआ था। इस चित्रकला में 'राधा–कृष्ण' को प्रेम प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। इसकी शैलियाँ मेवाड़, मारवाड़, हाड़ोती और ढूंढाड़ आदि है। **(चित्र सं० 8)** राजस्थानी शैली के पश्चात का कालक्रम पहाड़ी शैली का आता है। 'पहाड़ी शैली' भी एक लघु चित्रकला मानी जाती है। पहाड़ी शैली 'हिमाचल' की तलहटी में पनपी हुई कला शैली थी। ''राग रागनियों नायक– नायिका भेद तथा समस्त श्रृंगारिक क्रियायें पहाड़ी कलम की उभरती देह यष्टि में समाई हुई थी।''[9] पहाड़ी शैली में भी मुख्य विषय प्रेम ही है। पहाड़ी शैली सर्वाधिक 'राजा संसार चन्द' के समय में ही विकसित हुई। उन्होंने बहुत से चित्रकार अपने दरबार में रखे व अनेक चित्र बड़ी विशिष्टता के साथ निर्मित कराए। उन्होंने पहाड़ी चित्रकला को चरम तक पहुँचाया। भारतीय कला स्वरूप के अन्तर्गत 18वीं शताब्दी का काल आधुनिक कला शैली के रूप में विकसित हुआ। इसके अन्तर्गत पटना या कम्पनी शैली का सर्वप्रथम कालक्रम आता है। पटना या कम्पनी शैली एक आधुनिक शैली थी। पटना शैली से पहले एक शैली 'तन्जौर' नामक शैली भी थी। वह बहुत अल्पकालीन शैली थी। ''कम्पनी शैली के चित्रों में अनुकृत पोत को विशेष रूप से दर्शाया गया है।''[10]

अन्त में चित्रकारों ने अधिकतर पटना व कलकत्ता में शरण लेकर चित्रण कार्य किया। पटना शैली का चित्रण कार्य 'जन साधारण' के चित्रों से भरपूर है। यह बाजार शैली के नाम से भी जानी गई थी। **(चित्र सं० 9)** इस शैली के मुख्य कलाकार सेवकराम, ईश्वरी प्रसाद, फकीर चन्द्र, झूमक लाल तथा गोपाल चन्द आदि थे। पटना शैली में ही भारत में 'तैल चित्रण' का आविष्कार हुआ था। 'राजा रवि वर्मा' इस शैली के प्रसिद्ध कलाकार

थे। उन्होंने विभिन्न धार्मिक व पौराणिक चित्रों की रचना प्रतीकात्मक रूप में की थी। राजा रवि वर्मा भारत के एक महान कलाकार थे। पटना शैली के बाद बंगाल स्कूल का सूत्रपात हुआ। बंगाल स्कूल का उद्देश्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी व विदेशी चित्रों व चित्र विषयों को नकार कर भारतीय चित्र विषयों तथा मूल्यों को स्थापित करना था। ''हमारा कर्त्तव्य है कि दूसरे देशों के विविध वादों, सस्ते किस्म के टेक्निकों और चमत्कारों से प्रभावित न हो जाएँ।''[11]

इस शैली या आन्दोलन के प्रणेता अवनीन्द्रनाथ टैगोर व ई०बी० हैवेल थे। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विभिन्न शिष्यों के साथ मिलकर इस कला आन्दोलन को विकसित किया तथा भारतीय मूल्यों को चित्रकला के क्षेत्र में पुनः स्थापित किया। बंगाल स्कूल में वाश चित्रण का आविष्कार हुआ था व उसमें वाश चित्रण द्वारा ही चित्रकला विकसित हुई। बंगाल स्कूल के अन्तर्गत बनाए गए अवनीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा चित्रित चित्र भारत माता, यात्रा का अन्त, बुद्ध जन्म, माया मृग, गणेश जननी आदि थे। इस समय कला नए–नए रुपों में चित्रित होने लगी। **(चित्र सं० 10)** आधुनिक भारतीय कला चित्रकारों में रविन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल, यामिनी राय, मन्जीत बाबा, तैय्यब मेहता आदि प्रसिद्ध हैं।

सन्दर्भ

1. वर्मा, डॉ० अविनाश बहादुर, 2006, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, पृ०सं०–10।
2. अग्रवाल, डॉ० गिर्राज किशोर, कला और कलम, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ०सं०–11।
3. अग्रवाल, डॉ० आर०ए०, 2016, भारतीय चित्रकला का विवेचन, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृ०सं०–19।
4. द्विवेदी, डॉ० प्रेम शंकर, द्विवेदी, डॉ० मनीष कुमार, 2010, भारतीय भित्ति चित्रकला, कला प्रकाशन वाराणसी, पृ०सं०–23।
5. प्रताप, डॉ० रीता, 2016, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ०सं०–87।
6. अग्रवाल, डॉ० गिर्राज किशोर, कला और कलम, संजय पब्लिकशन्स, आगरा, पृ०सं०–109।
7. प्रताप, डॉ० रीता, 2016, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ०सं०–126।
8. शोधनिधि, 2009 शुभांकन ललित कला अकादमी एवं शोध संस्थान, अंक–1, पृ०सं०–47।
9. अग्रवाल, डॉ० आर०ए०, 2016, भारतीय चित्रकला का विवेचन, इण्टरनशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ पृ०सं०–156।
10. प्रताप, डॉ० रीता, 2016, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ०सं०–309।
11. समकालीन कला, ललित कला अकादमी दिल्ली, अंक 42–43, पृ०सं०–9

चित्र संख्या 1

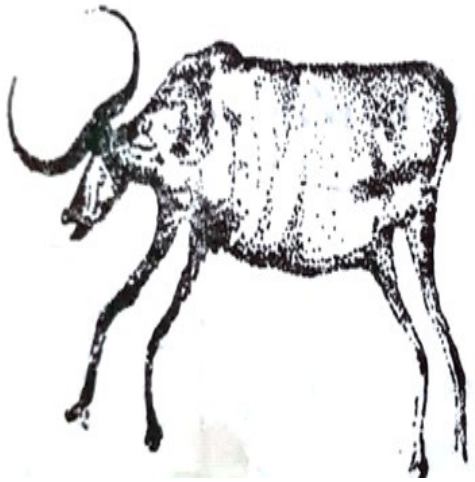

चित्र संख्या 2

चित्र संख्या 3

चित्र संख्या 4

चित्र संख्या 5

चित्र संख्या 6

चित्र संख्या 7

चित्र संख्या 8

चित्र संख्या 9

चित्र संख्या 10